

फॉरेन एक्सचेंज पर डायरेक्ट लसिटिंग

प्रलिस के लयि:

डायरेक्ट लसिटिंग, डपिऑजटिरी रसीद, [आरंभिक सार्वजनिक पेशकश \(IPO\)](#)

मेन्स के लयि:

भारत में वदिशी मुद्रा वनिमिय, पूंजी बाज़ार, वृद्धि एवं विकास

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यों?

भारत सरकार ने कुछ **भारतीय कंपनियों** को वैश्विक पूंजी तक पहुँच के लिये प्रत्यक्ष [वदिशी स्टॉक एक्सचेंजों](#) में सूचीबद्ध होने की अनुमति दी है।

- 30 अक्टूबर, 2023 से प्रभावी यह प्रावधान [कंपनी \(संशोधन\) अधिनियम, 2020](#) के माध्यम से पेश किया गया था।
- यह घरेलू सार्वजनिक कंपनियों के कुछ वर्गों को कुछ प्रक्रियात्मक आवश्यकताओं (जैसे प्रॉस्पेक्टस, शेयर पूंजी, लाभकारी स्वामित्व आवश्यकताओं और लाभांश वितरित करने में वफ़िलता) से छूट के साथ अहमदाबाद, गुजरात में [GIFT अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र \(IFSC\)](#) सहित वदिशी स्टॉक एक्सचेंजों पर अपनी प्रतभूतियों को सूचीबद्ध करने की अनुमति देता है।

नोट:

- IFSC एक वित्तीय केंद्र है जो घरेलू अर्थव्यवस्था के अधिकार क्षेत्र से बाहर के ग्राहकों को सेवाएँ प्रदान करता है।
- भारत में IFSC को [अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण \(IFSCA\)](#) द्वारा वनियमति किया जाता है, जो एक वैधानिक प्राधिकरण है जसि [अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण अधिनियम, 2019](#) के तहत स्थापति किया गया था।
 - इसका मुख्यालय गुजरात में GIFT सटि, गांधीनगर में है।
- वर्तमान में GIFT IFSC भारत में नवीन IFSC है।
- IFSC में, सभी लेनदेन [वदिशी मुद्रा \(INR को छोड़कर\)](#) में होने चाहिये। हालाँकि प्रशासनिक और वैधानिक खर्च INR में किये जा सकते हैं।

डायरेक्ट लसिटिंग:

- डायरेक्ट लसिटिंग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई कंपनी नए शेयर जारी किये बिना या नविशकों से पूंजी जुटाए बनिष्पने **शेयरों को वदिशी स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध कर सकती है।**
- डायरेक्ट लसिटिंग [प्रारंभिक सार्वजनिक पेशकश \(IPO\)](#) से अलग है, जहाँ एक कंपनी अपने शेयरों का एक हस्सिा जनता को बेचती है और नविशकों से धन जुटाती है।
- डायरेक्ट लसिटिंग डपिऑजटिरी रसीट (Depository Receipt- DR)** रूट से भी अलग है, जहाँ एक कंपनी एक कस्टोडियन बैंक को अपने शेयर जारी करती है, जो फरि वदिशी नविशकों को DR जारी करता है।
 - DR परक्राम्य प्रमाणपत्र हैं जो कंपनी के अंतरनहिति शेयरों का प्रतनिधित्व करते हैं और वदिशी मुद्रा पर व्यापार करते हैं।
- प्रत्यक्ष लसिटिंग से कंपनी को नविशकों के एक बड़े और अधिक वविधि पूल तक पहुँचने, उसकी दृश्यता तथा ब्रांड मूल्य बढ़ाने एवं उसके कॉर्पोरेट प्रशासन व अनुपालन मानकों में सुधार करने की अनुमति मिलती है।

भारतीय कंपनियों का वर्तमान में वदिशी मुद्रा पर सूचीबद्ध होना:

- वर्तमान में भारतीय कंपनियों अमेरिकी ड्रिपॉजिटरी रसीदों (ADR) और ग्लोबल ड्रिपॉजिटरी रसीदों (GDR) सहित ड्रिपॉजिटरी रसीदों का उपयोग करके वदेशी बाजारों में सूचीबद्ध होती हैं।
 - वदेशी स्टॉक एक्सचेंजों पर सूचीबद्ध होने के लिये, भारतीय कंपनियों अपने शेयर एक भारतीय संरक्षक को सौंपती हैं, जो फरि वदेशी नविशकों को ड्रिपॉजिटरी रसीदें (DR) जारी करता है।
- वर्ष 2008 और वर्ष 2018 के बीच 109 कंपनियों ने ADR/GDR के माध्यम से 51,000 करोड़ रुपए से अधिक जुटाए।
- हालाँकि वर्ष 2018 के बाद कसि भी भारतीय कंपनी ने इस प्रकार से वदेशी लसि्टगि को आगे नहीं बढ़ाया।

नोट:

- ADR एक अमेरिकी ड्रिपॉजिटरी बैंक द्वारा जारी किये गए एक परकराम्य प्रमाणपत्र को संदर्भित करता है जो शेयरों की एक नरिदषि्ट संख्या का प्रतनिधित्व करता है, आमतौर पर यह एक वदेशी कंपनी के स्टॉक का एक हसिसा है।
- GDR ड्रिपॉजिटरी बैंक द्वारा जारी किये गया एक प्रमाणपत्र है जो एक वदेशी कंपनी में शेयरों का प्रतनिधित्व करता है और उन्हें एक खाते में जमा करता है। GDR का कारोबार ज्यादातर यूरोपीय बाजारों में होता है।

• डायरेक्ट फॉरेन लसि्टगि के लाभ:

- बड़े और अधिक तरल बाजार तक पहुँच, जसिसे उनके शेयरों की मांग तथा मूल्यांकन बढ़ सकता है।
- व्यापक और अधिक परषिक्त नविशक आधार तक पहुँचने की क्षमता, जो उनकी प्रतषिठा एवं वशि्वसनीयता को बढ़ा सकती है।
 - फंड जुटाने और अपनी वैश्विक प्रोफाइल बढ़ाने के इस तरीके से स्टार्टअप और यूनकिॉर्न कंपनियों को लाभ हो सकता है।
- IPO या DR प्रकरिया में समय और शामिल लागत, जैसे-अंडरराइटगि शुल्क, लसि्टगि शुल्क, कानूनी शुल्क इत्यादि की बचत।
- नए शेयर या DR जारी करने के साथ आने वाले स्वामित्व और नयित्रण को कमजोर होने से बचाना।
- वदेशी कषेत्राधिकार की सर्वोत्तम प्रथाओं और नयिमों के संपर्क में आने से उनके प्रशासन तथा पारदर्शति में सुधार हो सकता है।

• डायरेक्ट फॉरेन लसि्टगि में शामिल चुनौतियाँ:

- वदेशी कषेत्राधिकार के कानूनों और नयिमों का अनुपालन, जो भारत से भिन्न या अधिक कठोर हो सकते हैं।
- डायरेक्ट फॉरेन लसि्टगि में चुनौतियों में मूल्यांकन के मुद्दे शामिल हैं, क्योंकि वैश्विक नविशक भारत के समान मूल्यांकन की पेशकश नहीं कर सकते हैं, जो संभावति रूप से कंपनी की बाजार धारणा और मूल्य नरिधारण को प्रभावति कर सकता है।
- मुद्रा में उतार-चढ़ाव और वदेशी मुद्रा की बाजार अस्थरिता के संपर्क में आने से उनके शेयर की कीमत तथा रटिर्न पर असर पड़ सकता है।
 - भारत या वदेश में मौजूदा शेयरधारकों, नयिमकों या कर अधिकारियों के साथ संभावति टकराव या वविद।
- सारवजनिक कंपनियों के वर्ग जो इस पद्धतिका उपयोग कर सकते हैं, प्रतभूतियाँ जिनको सूचीबद्ध किये जा सकता है, वदेशी कषेत्राधिकार एवं लसि्टगि के लिये अनुमोदति स्टॉक एक्सचेंज तथा प्रकरियात्मक अनुपालन के संबंघ में इन कंपनियों को प्रदान की जाने वाली छूट सभी को स्पष्ट करने की आवश्यकता है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. पंजीकृत वदेशी पोर्टफोलियो नविशकों द्वारा उन वदेशी नविशकों को, जो स्वयं को सीधे पंजीकृत कराए बिना भारतीय स्टॉक बाजार का हसिसा बनना चाहते हैं, नमिनलखिति में से क्या जारी किये जाता है? (2019)

- जमा प्रमाण-पत्र
- वाणजियक पत्र
- वचन-पत्र (प्रॉमसिसरी नोट)
- सहभागति पत्र (पार्टसिपिटरी नोट)

उत्तर: (d)

प्रश्न. भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजिये: (2020)

- 'वाणजियक पत्र' एक अल्पकालिक प्रतभूतिरहित वचन पत्र है।
- 'जमा प्रमाण-पत्र' भारतीय रजिर्व बैंक द्वारा एक नगिम को जारी किये जाने वाला एक दीर्घकालिक प्रपत्र है।
- 'शीघ्रावधिदरव्य' अंतर-बैंक लेन-देनों के लिये प्रयुक्त अल्प अवधिका वतित है।
- 'शून्य-कूपन बॉण्ड' अनुसूचति व्यापारिक बैंकों द्वारा नगिमों को नरिगत किये जाने वाले ब्याज सहित अल्पकालिक बॉण्ड हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 4
- (c) केवल 1 और 3
- (d) केवल 2, 3 और 4

उत्तर: (c)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/direct-listing-on-foreign-exchanges>

